Date - 15/04/2020
Day - Wednesday

B.Ed Ist year

Sub - Growing up AS A learner

Unit - III

Topic - अधिगम सिद्धान्त

कर्ट लेविन का संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धान्त

क्षेत्र सिद्धान्तो के अन्तर्गत 'लेविन के संज्ञानात्मक क्षेत्र' का विशेष महत्व है।

"सीखना एक सापेक्षिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से अधिगमकर्ता में नवीन अन्तर्दृष्टि का विकास होता है अथवा प्राचीन मे परिवर्तन होता है।" — लेविन के संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धान्त

"अधिगम वातावरण का संगठन है।" — कर्ट लेविन

संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धान्त के आधार

1 - क्षेत्र → व्यक्ति, उससे सम्बन्धित समग्र तथ्य, विश्वास, आकांक्षाएं
2 - जीवन-विस्तार।
3 - मनोवैज्ञानिक वातावरण → सामाजिक / भौतिक, ये मिलकर
4 - विदेशी माल → व्यक्ति + वातावरण = प्रभावित change विदेशी माल
5 - तलरूप → व्यक्ति की स्थिति को उद्देश्यों से सम्बन्धित मानचित्र अवरोध से निर्धारित करना।
6 - सदिश → दिशा, शक्ति, प्रयोग बिन्दु
7 - कर्षण शक्तियाँ।
8 - अवरोध।

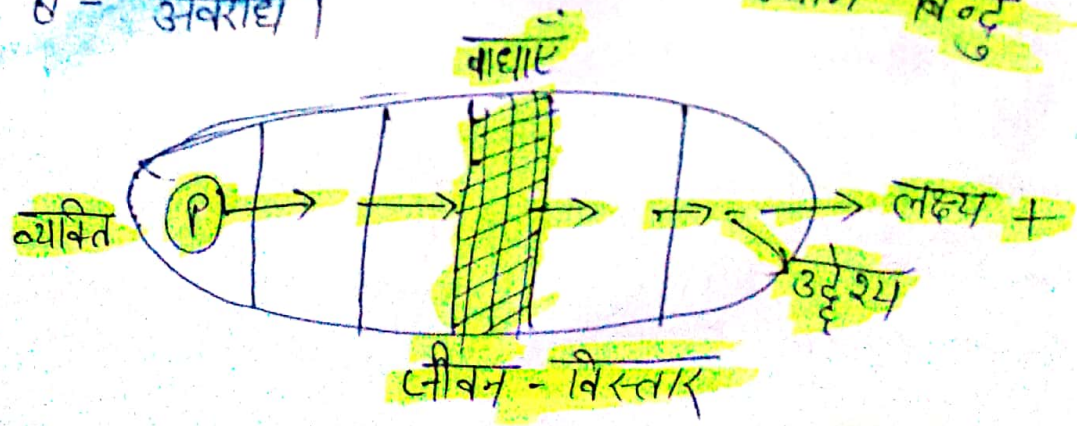

Scanned with CamScanner

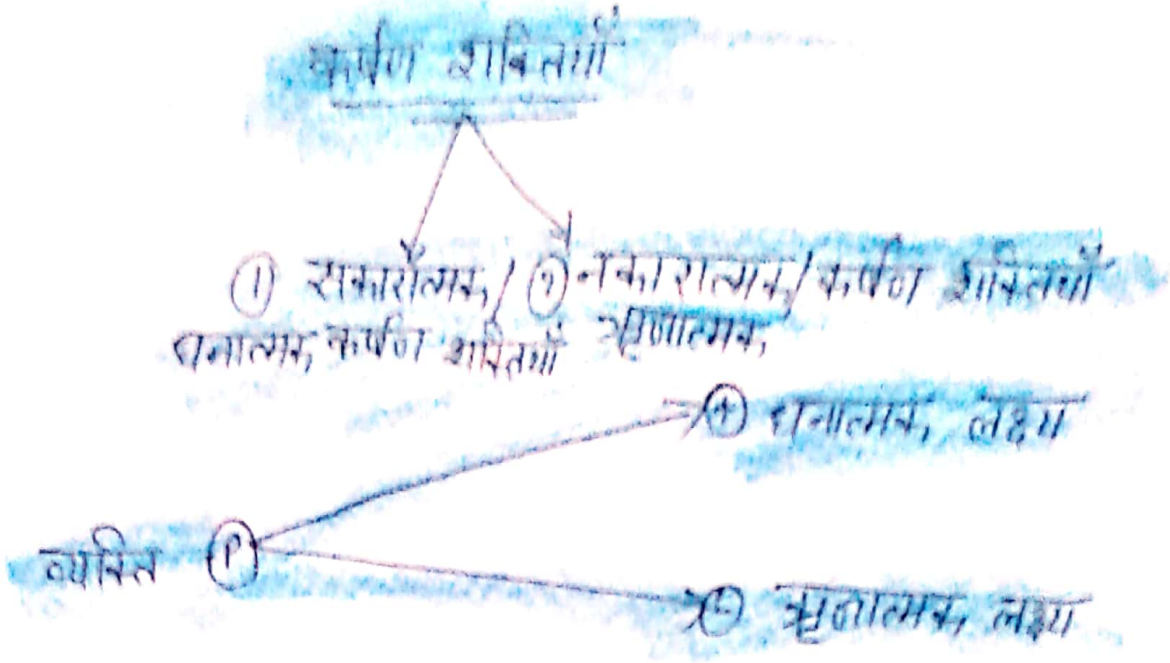

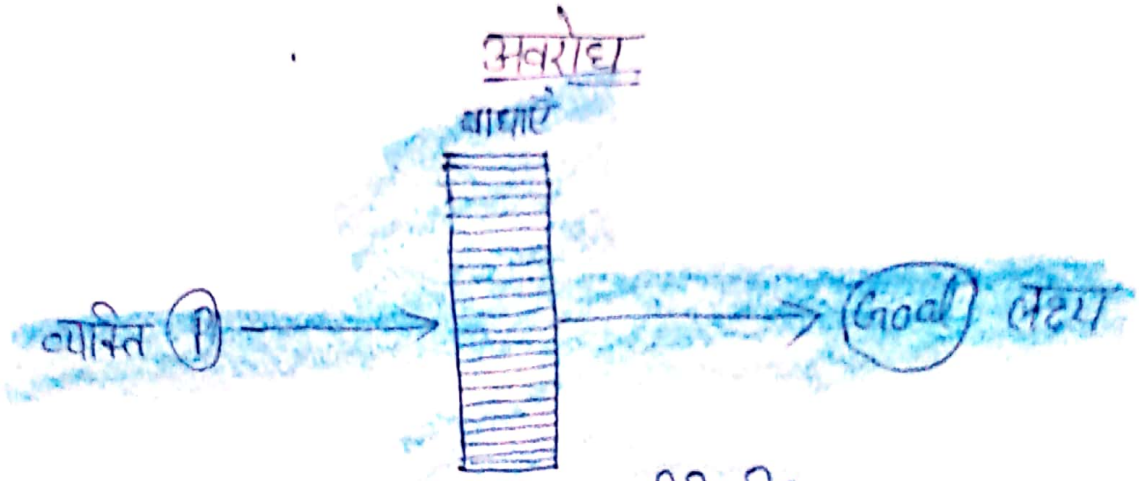

समस्यात्मक परिस्थिति

संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धान्त का शिक्षा में प्रयोग

(1) योग्यता के अनुसार अधिगम।
(2) जीवन-विस्तार की भिन्नता।
(3) अन्तर्दृष्टि का विकास।
(4) शिक्षार्थियों के अनुकूल विषय।
(5) कक्षा का भौतिक व सामाजिक वातावरण।
(6) आवश्यकताओं का ज्ञान।
(7) मानसिक असन्तुलन (असन्तुलन) का निराकरण।
(8) सीखने के लिए अभिप्रेरणा।
(9) समुचित वातावरण।
(10) उच्च स्तरीय आकांक्षायें।

Scanned with CamScanner